WORLDWIDE NEWS INDIA
9810336399

Name of the Paper : INDIAN EXPRESS
Place of Publication : CHENNAI
Dated 21 AUG 2007

INDIA'S ICONS

KB

Mother Teresa

WHEN she made her journey from Macedonia, she knew that her life was dedicated to God – and her chosen means to reach Him was the poor. On October 7, 1950, Mother Teresa set up 'The Missionaries of Charity', whose primary task was to love and care for those persons nobody was prepared to look after. Mother Teresa's work has been recognised throughout the world. Her Nobel prize for peace was just a small recognition of her work.

Kiran Bedi

THE year 1972 was a significant one for both, women and the police service. Kiran Bedi became the first woman to join the Indian Police Service. She was honoured with the UN medal for outstanding service as a police advisor in the United Nations peacekeeping department. During her tenure at Tihar jail she implemented ideas like prison reforms, for which she was accorded with the Magsasay Award. She has also established two organisations – Navajyoti and India Vision Foundation – to improve the condition of drug addicts and poor people.

Kalpana Chawla

SHE became the first Indian woman to step in space. Born in Karnal in Haryana, Kalpana enjoyed flying aerobatics and tail-wheel airplanes. In 1988, Kalpana Chawla started working at NASA STS-107 Columbia (January 16 to February 1, 2003). The 16-day flight was a dedicated science and research mission. The STS-107 mission ended abruptly on February 1, 2003 when Space Shuttle Columbia and her crew perished during entry, 16 minutes prior to scheduled landing.

NAI DUNIYA
INDORE
18 AUG 2007

KB 8

नारीत्व की पहचान है उसके गुण

■ केवल किसी परिधान मात्र को नारी की लज्जा अथवा संस्कृति के प्रति समर्पण नहीं माना जा सकता है। व्यक्तित्व तथा नारीत्व की पहचान किसी परिधान से नहीं अपितु उसके स्वभाव तथा आचरण में व्याप्त गुणों-अवगुणों से की जाती है।

आए दिन समाचारों में देखने व पढ़ने को मिलता है कि दहेज लोभियों ने नववधू को जलाया या मरने के लिए विवश किया, उसे प्रताड़ित किया, घूँघट की आड़ में बढ़ती अनैतिकता, कन्या भ्रूण हत्याओं में होता इजाफा आदि क्या इन सब में सिर पर पल्लू लेने वाली महिलाओं का कोई हाथ नहीं है। ऐसे दुष्कृत्यों के पीछे परिधान नहीं वरन दूषित भावनाएँ तथा विकृत मानसिकता काम करती है।

आज की प्रतिस्पर्धात्मक एवं भागमभाग जिंदगी में कार्यस्थल पर साड़ी पहन, सिर पर पल्लू डाल सुचारु रूप से कार्य करना शायद ही किसी महिला के लिए संभव हो। इस संदर्भ में पत्र लेखक ने जिन भी महिलाओं के उदाहरण प्रस्तुत किए हैं, वे देश के शायद चोटी की सक्रिय राजनीति से प्रमुखता से जुड़ी रही हैं और वर्तमान की राजनीति को देखते हुए व्यावहारिक धरातल पर ऐसे उदाहरणों का भारतीय संस्कृति में कोई विशेष महत्व नहीं है। कल्पना चावला, सुनीता विलियम्स, किरण बेदी, सानिया मिर्जा, पीटी उषा आदि महिलाएँ ऐसे उदाहरण हैं, जिन्होंने भारतीय संस्कृतिसम्मत कार्य करते हुए अन्य परिधान पहन देश को गौरवान्वित कर विश्व के लिए मिसाल कायम की है।

-मीरा जैन, 516, महर्षिनाथ कॉलोनी
सेठी नगर, उज्जैन